JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के समायोजन सामाजिक व्यवहार एवं अध्ययन आदतों पर पारिवारिक संबंधों के प्रभाव का अध्ययन

मदन मोहन झा[1], डॉ आर. पी. यादव[2]

[1]शोधार्थी रामचन्द्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय पलामू झारखण्ड

[2]शोद्य निदेशक रामचन्द्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय पलामू झारखण्ड

सोध सारांश

हमें अच्छी तरह से पता है कि माध्यमिक शिक्षा का महत्व क्या है, जो हमारे सामाजिक, मानसिक, और शैक्षिक विकास को आकार देता है। हमारी अध्ययन में, हम यह जानने के लिए ध्यान देंगे कि विभिन्न परिवारिक संबंध किस प्रकार माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के समायोजन, सामाजिक व्यवहार, और अध्ययन आदतों पर प्रभाव डालते हैं। इस अनुसंधान के माध्यम से, हम इन विद्यार्थियों के शैक्षिक और सामाजिक परिवेश को बेहतर से बेहतर समझने का प्रयास करेंगे, ताकि हम उनके जिम्मेदारियों को समझ सकें और उन्हें बेहतर शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए नीतियों को सुझा सकें। परिवार एक बहुत ही मूल्यवान संस्था है जिसमें प्राचीनतम, स्थायी, प्राकृतिक, और आवश्यक रक्त संबंधों पर आधारित होता है, जिसके बिना मानव जाति का अस्तित्व संदिग्ध हो सकता है। परिवार के बिना हम एक निरंतर परावलंबी मानव के पालन-पोषण की कल्पना भी नहीं कर सकते। छात्र परिवार के छाया में परिवार के सदस्यों के स्नेह और प्रेम से पुष्ट होता है, उसका प्राकृतिक विकास होता है, और वह बालक से बलवान पल्लवित, पुष्पित होता है और हरे-भरे वृक्ष के रूप में सर्वांगीण विकास को प्राप्त होता है। समायोजन एक सामान्य और लगातार प्रवाहित प्रक्रिया है। हमारे रोजमर्रा के कार्यों का अधिकांश समायोजन और समन्वय से होता है। हम अनेक उपकरणों को इस प्रकार से स्थानांतरित करते हैं, जिससे उनकी क्रियात्मकता में वृद्धि होती है। इसका अर्थ है कि समायोजन का मकसद किसी वस्तु को इस प्रकार से व्यवस्थित और संरचित करना होता है ताकि उसके निर्माण किए गए उद्देश्य को पूरा किया जा सके। छात्रों के शैक्षिक अनुभव में सुधार करने के लिए सुझावित नीति विकास में मदद करेगा। इन शोधों में विभिन्न विषयों और चरों के माध्यम से अध्ययन किया गया है, शोधकर्ता ने "माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन सामाजिक व्यवहार एवं अध्ययन आदतों पर पारिवारिक सम्बन्धों के प्रभावों का अध्ययन" शीर्षक पर अध्ययन करने का निश्चय किया ।

मुख्य शब्दः माध्यमिक विद्यालय, समायोजन, सामाजिक व्यवहार, अध्ययन आदत, पारिवारिक संबंध

प्रस्तावना

माध्यमिक शिक्षा जीवन में एक महत्वपूर्ण चरण होता है जो छात्रों के सामाजिक, मानसिक, और शैक्षिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस अध्ययन में, हम विभिन्न परिवारिक संबंधों के प्रभाव को माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के समायोजन, सामाजिक व्यवहार, और अध्ययन आदतों पर विशेष ध्यान देंगे। इस अध्ययन के माध्यम से, हम छात्रों के शैक्षिक और

सामाजिक परिवेश को समझने में मदद करेंगे, ताकि हम उनके उत्तरदायित्व को समझ सकें और उन्हें बेहतर शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए नीतियों को सुझा सकें। परिवार प्राचीनतम, स्थायी, प्राकृतिक अनिवार्य एवं रक्त सम्बन्धों पर आधारित अत्यन्त उपयोगी संस्था है जिसके अभाव में मानव जाति का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है। परिवार के बिना हम नितान्त परावलम्बी मानव के पालन पोषण की कल्पना भी नहीं कर सकते। शिशु मानव परिवार की छत्र-छाया में परिवार के सदस्यों के स्नेह और प्रेम से पुष्ट होता है, उसका नैसर्गिक विकास होता है, वह बालक से बलवान पल्लवित, पुष्पित होता है और हरे-भरे वृक्ष के रूप में सर्वांगीण विकास को प्राप्त होता है। वृक्ष की भांति सेवा और बलिदान का आदर्श बालक यहीं से ग्रहण करता है।

समायोजन एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है। जीवित अवयव साधारण से जटिल अवस्था में निरन्तर समायोजन का प्रयास करता है। इस समायोजन का सम्बन्ध प्राणिशास्त्रीय आवश्यकताओं जैसे-भूख तथा प्यास की संतुष्टि से सम्बन्धित होता है अथवा मानवीय स्तर पर मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं जैसे- सम्बन्ध स्थापना की इच्छा, प्रेम तथा वात्सल्य प्राप्त करने की इच्छा या रचनात्मक आत्म प्रदर्शन के अवसर झाप्त करने की इच्छा पूर्ति से होता है। समायोजित व्यक्ति सामाजिक परिस्थितियों तथा दशाओं को पर्यावरण में इस प्रकार समायोजित करने का प्रयत्न करते हैं जिससे क्रियाओं के प्रतिदिन के कार्यक्रम सरलता से चल सकें। अध्ययन सामाजिक व्यवहार एवं चरित्र निर्माण में भी सहायक है, अध्ययन से हमारी चिन्ताएं दूर होती है। हमारी शंकाओं का समाधान होता है, मन में सद्भाव और शुभ संकल्प उत्पन्न होते हैं तथा हमारी आत्मा को शांति मिलती है। अध्ययन मानव जीवन को सुखी और समुन्नत बनाता है। स्वाध्याय से प्रतिदिन सद्यन्थों का अध्ययन करने से बुद्धि तीव्र होती है विवेक बढ़ता है और अन्तःकरण की शुद्धि होती है। अध्ययनशील व्यक्ति कुसंग से उत्पन्न होने वाली विकृतियों से बच जाता है। "निरन्तर अध्ययन करते रहने से मनुष्य का ज्ञान बढ़ता है तथा वाणी सफल सार्थक और प्रभावशाली बनती है। अध्ययनशील व्यक्ति का ही कथन प्रमाणिक और तथ्यपूर्ण माना जाता है। संसार ज्ञान की जन्मभूमि है, इसलिए जो व्यक्ति अध्ययनशील होता है वह नित नये ज्ञान से अवगत होता रहता है। अध्ययनशील व्यक्ति एक जागरूक नागरिक की भांति जीवन जीने का वास्तविक सुख प्राप्त कर लेता है। अध्ययन आदत में वृद्धि की चाहत सभी रखते हैं खासतौर पर विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राओं में इसकी ललक कुछ विशेष ही रहती है ज्यादातर विद्यार्थी किसी ऐसे नुस्खे, ऐसी तकनीकों की तलाश में रहते हैं जो उनकी बौद्धिक क्षमता को बढ़ा दे। "बुद्धिहीन व्यक्ति बुद्धिमान कैसे बनें? जो बुद्धिमान हैं वे अपनी बौद्धिक क्षमता कैसे बढ़ाये? इस पर पं. गोपीनाथजी का कहना है कि बौद्धिक क्षमता या अध्ययन आदत को बढ़ाने के लिए पहला उपाय है स्थिरता, ध्यान रहे हमारी चंचल वृत्तियाँ ही हमारे बौद्धिक विकास को रोकती हैं। इस अवरोध को हटाने के लिए आवश्यक है कि तुम धीरे-धीरे ही सही क्रमिक रूप से निरन्तर तीन घण्टे बैठकर पढ़ने का अभ्यास करो। शरीर के स्थिर होने पर मन भी स्थिर होता है। साथ ही बुद्धि भी विकसित होती है। इस क्रम में दूसरा बिन्दु है- एकाग्रता इसके लिए जरूरी है कि अपने अध्ययन-विषय पर एकाग्र बनो। न समझ में आने के बावजूद उसे पूरी एकाग्रता से समझने की कोशिश करो। निरन्तर एकाग्रता का अभ्यास तुम्हारी समझ को अपने आप ही विकसित कर देगा।

पारिवारिक सम्बन्धों का प्रभाव विद्यार्थी के ऊपर प्रत्यक्ष रूप पड़ता है। जिन परिवारों में माता-पिता बराबर लड़ते-झगड़ते रहते हैं उनके घर का वातावरण हमेशा तनावयुक्त बना रहता है। इस तनाव में उनके बच्चे भी ठीक प्रकार से कार्य नहीं कर पाते हैं, जिसके कारण उनके सामाजिक व्यवहार में गिरावट होती जाती है और उनमें अनुशासनहीनता, चिड़चिड़ापन, क्रोध आदि की मात्रा बढ़ती जाती है। इससे उनके और माता-पिता के बीच समायोजन पर भी बहुत प्रभाव पड़ता है फलस्परूप

उनकी अध्ययन आदतें भी प्रभावित होती हैं। इसलिए शोधकर्ता ने उपर्युक्त समस्याओं को ध्यान में रखते हुए इन कारणों को जानने और इसके समाधान हेतु अपने शोध विषय का चयन किया है। अतः माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन, सामाजिक व्यवहार और अध्ययन आदतों पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी प्राप्त होगी। इस प्रकार इन समस्याओं को दूर करने में प्रस्तुत शोध कार्य से सुगमता होगी।

अध्ययन की परिकल्पनाऐं:-

i. पारिवारिक संबंधों का प्रभाव:
   a. पारिवारिक माहौल के अध्ययन से छात्रों के अध्ययन और सामाजिक व्यवहार पर कैसा प्रभाव पड़ता है।
   b. परिवार में शैक्षिक मानकों, स्वास्थ्य आदतों, और सामाजिक मूल्यों के प्रचार-प्रसार का असर।

ii. माध्यमिक विद्यालय के समायोजन पर प्रभाव*:
   a. परिवारिक भावनाओं, सांस्कृतिक विरासत, और आदर्शों का माध्यमिक शैक्षिक प्रणाली पर कैसा प्रभाव होता है।
   b. छात्रों के अध्ययन और सामाजिक व्यवहार पर पारिवारिक अभिप्रेरणा का महत्व।

iii. स्वीकृति एवं अस्वीकृति प्रदान करने वाले पारिवारिक सम्बन्धों के छात्रों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

iv. स्वीकृति एवं अस्वीकृति प्रदान करने वाले पारिवारिक सम्बन्धों के छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

v. स्वीकृति एवं अस्वीकृति प्रदान करने वाले पारिवारिक सम्बन्धों के छात्रों के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

vi. स्वीकृति एवं अस्वीकृति प्रदान करने वाले पारिवारिक सम्बन्धों के छात्राओं के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

vii. स्वीकृति एवं अस्वीकृति प्रदान करने वाले पारिवारिक सम्बन्धों के छात्रों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

viii. स्वीकृति एवं अस्वीकृति प्रदान करने वाले पारिवारिक सम्बन्धों के छात्राओं की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का औचित्य:-

सम्बन्धित साहित्यों का पुनरावलोकन करने पर यह जानकारी प्राप्त होती है कि अभी तक इस समस्या से सम्बन्धित अलग-अलग चरों के माध्यम से विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा अध्ययन किये गये है जैसे- चितौड़ा, शशि (1996) ने - "आदिवासी एवं गैर आदिवासी किशोर विद्यार्थियों की हीन भावना, अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन । शीर्षक पर शोध कार्य किया। अग्रवाल, सुभाषचन्द्र (2000) ने - अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति एवं सामान्य जाति के छात्रों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन । शीर्षक पर शोध कार्य किया। चतुर्वेदी, अर्चना (2001) ने "विभिन्न सांस्कृतिक संगठनों द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तिगत गुणों, नैतिक सामाजिक व्यवहार और राष्ट्रीय जागरूकता की भावना का अध्ययन।" शीर्षक पर शोध कार्य किया। गुप्ता, आर.पी. (2003) ने "दो विधियों से निर्धारित जीवन सामाजिक व्यवहार के

उसके शैक्षिक निहितार्थ शीर्षक पर शोध कार्य किया। वर्मा, मधुरिमा (2003) ने - "लाभान्वित व अलाभान्वित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन आदतों एवं व्यक्तित्व का अध्ययन"*" शीर्षक पर शोध कार्य किया।

3. सामाजिक व्यवहार पर परिवारिक प्रभाव:

पारिवारिक संबंधों के रूप में विशेषता, सम्मान, और साझेदारी के मूल्यों का अध्ययन कैसे सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव डालता है।

पारिवारिक समर्थन की भूमिका और छात्रों के सामाजिक उत्थान में योगदान।

4. अध्ययन आदतों का पारिवारिक संबंध पर प्रभाव

पारिवारिक माहौल में पढ़ाई की महत्वपूर्णता और छात्रों के अध्ययन आदतों पर प्रभाव।

पारिवारिक संबंधों की स्थिरता और छात्रों की अध्ययन संबंधी प्रवृत्तियों पर उनका प्रभाव।

अनुसंधान का उपाय

1. प्राथमिक अनुसंधान

पारिवारिक संबंधों के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने के लिए प्राथमिक डेटा का संग्रह।

विभिन्न परिवारों के माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों की जानकारी के आधार पर अध्ययन।

2. सेकेंडरी अनुसंधान

विशेषज्ञों के अध्ययन और पूर्व-अनुमान के साथ पूर्व अनुसंधान के लिए पुस्तकों, लेखों, और अन्य स्रोतों का पुनरावलोकन।

आंकड़ों के विश्लेषण और परिणामों का विवेचन।

परिणाम और विवेचन

अध्ययन के परिणामों का विश्लेषण करते समय, हम छात्रों के सामाजिक व्यवहार, अध्ययन आदतें, और माध्यमिक विद्यालय के समायोजन पर पारिवारिक संबंधों के प्रभाव को समझेंगे। यह हमें छात्रों के शैक्षिक अनुभव में सुधार करने के लिए नीतियों की सुझावित विकास में मदद करेगा। इन शोधों में विभिन्न विषयों और चरों के माध्यम से अध्ययन किया गया है, परन्तु विद्यार्थियों के समायोजन, सामाजिक व्यवहार एवं अध्ययन आदतों पर पारिवारिक सम्बन्धों के प्रभावों का अध्ययन एक साथ नहीं किया गया है इसलिए शोधकर्ता ने "माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन सामाजिक व्यवहार एवं अध्ययन आदतों पर पारिवारिक सम्बन्धों के प्रभावों का अध्ययन" शीर्षक पर अध्ययन करने का निश्चय किया और इस शीर्षक को अपने अध्ययन का मुख्य प्रतिपाद्य विषय बनाया। शोधकर्ता का मानना है कि अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षा जगत में अल्प मात्रा में अवश्य योगदान दे सकेंगे।

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या:-

(A) पारिवारिक सम्बन्ध:-

पारिवारिक सम्बन्धों में पति-पत्नी के साथ-साथ बच्चों का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। परिवार में बच्चों और माता-पिता के बीच सम्बन्धों को मुख्यतः तीन महत्वपूर्ण रूप में देखा जाता है। जिनमें प्रथम प्रकार है- स्वीकारोक्ति, इसमें माता-पिता अपने बच्चों की अधिकतम बातों को स्वीकार कर लेते हैं। बच्चा जो कुछ भी कहता है माता-पिता उसकी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं

ऐसे अभिभावक बच्चों की हर प्रकार की समस्याओं को दूर करने का भरसक प्रयास करते हैं। दूसरा प्रकार है-ध्यान देने वाले, इसमें बच्चों के ऊपर नियंत्रण रखा जाता है। माता-पिता बच्चों की आवश्यक मांगों को ही पूरा करते हैं और अनावश्यक बातों के प्रति जागरूक रहते हैं। वे बच्चों को अच्छी-बुरी बातों के प्रति सचेत भी करते हैं। तीसरा प्रकार- अस्वीकारोक्ति, इसमें ऐसे माता-पिता आते हैं जो अपने बच्चों पर ध्यान नहीं देते हैं। उनकी जायज मांगों को भी अस्वीकार कर देते हैं। उनकी इच्छाओं का दमन करते हैं।

(B) सामाजिक व्यवहार:-

इंग्लैण्ड के सामाजिक मानव-शास्त्री ईवान्स के अनुसार "परिवार, बन्धुत्व, राजकीय संगठन, विधि-विधान और धार्मिक सम्प्रदायों जैसी संस्थाओं में व्यक्ति द्वारा प्रदर्शित व्यवहार ही सामाजिक व्यवहार है, जिसका अध्ययन सामाजिक मानव-शास्त्र के अन्तर्गत किया जाता है।

विश्व पुस्तक शब्द कोष के अनुसार - "समाजिक व्यवहार समाज, राष्ट्र, समूह एवं भीड़ में व्यक्ति द्वारा प्रदर्शित व्यवहार है।

(c) समायोजन:-

समायोजन एक सार्वभौमिक एवं निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। हमारी दिन-प्रतिदिन की क्रियाओं का अधिकतर सम्बन्ध समायोजन तथा अनुकूलन से होता है। हम अनेक यंत्रों को इस प्रकार से यथा स्थान व्यवस्थित करते हैं, जिससे उनकी कार्यात्मकता में वृद्धि होती है। इस अर्थ में समायोजन का तात्पर्य किसी वस्तु को इस प्रकार से व्यवस्थित एवं संगठित करना जिससे जिस उद्देश्य के लिए वह बनाया गया है उसकी पूर्ति हो सके।

(D) अध्ययन आदत:-

स्किनर के अनुसार:- सीखना व्यवहार में उत्तरोतर सामंजस्य की प्रक्रिया

रेवर्न के अनुसार:- सीखना आदतों के निर्माण की प्रक्रिया है।

मार्गन और डीज के अनुसार: अध्ययन सीखने का एक सपूर्ण प्रयास है।

परिसीमन:-

1. बिहार राज्य के अन्तर्गत बेगूसराय जिले को सम्मिलित किया गया।
2. शोध में 150 न्यादर्श लिये गये हैं, जिनमें 75 छात्र एवं 75 छात्राओं को सम्मिलित किया गया।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन:-

(क) भारत में सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन:

(ख) विदेशों में सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन:

(ग) समायोजन अनुसूची - डॉ. पेन्नी जैन।

(घ) अध्ययन आदत अनुसूची - डॉ. बी. वी. पटेल ।

प्रयुक्त सांख्यिकी:-

(1) मध्यमान (Mean)

(2) मानक विचलन (S.D.)

(3) - क्रान्तिक अनुपात (C.R.Value)

संमकों का सारणीय एवं विश्लेषण

दत्तों को सारणीयन

दत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन में एकत्रित आँकड़ों का उचित सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग से विश्लेषण कर उसकी व्याख्या की जायेगी।

निष्कर्ष

इस अध्ययन के माध्यम से हमने पाया है कि पारिवारिक संबंधों का महत्वपूर्ण योगदान माध्यमिक शिक्षा में छात्रों के समायोजन, सामाजिक व्यवहार, और अध्ययन आदतों में होता है। पारिवारिक माहौल, संस्कृति, और मूल्यों का असर छात्रों के शैक्षिक अनुभव पर होता है और उनके शैक्षिक सफलता पर प्रभाव डालता है। इस प्रकार, यह अध्ययन छात्रों के शैक्षिक अनुभव में सुधार के लिए महत्वपूर्ण संदेश और नीतियों की सिफारिश करता है।

सन्दर्भ सूची:

1. अरोड़ा, श्रीमती रीता (2005) शिक्षण एवं अधिगम के मनो-सामाजिक आधार" शिक्षा प्रकाशन जयपुर, पृष्ठ संख्या. 326-327
2. कपिल, एच के. (1979) अनुसंधान विधियाँ" द्वितीय संस्करण हरिप्रसाद भार्गव हाऊस आगरा, पृष्ठ संख्या-23
3. कुंवर भुवनेन्द्र सिंह, (2004)स्वाध्याय एक साधना" कल्याण वर्ष 82 सं. 2 गीता प्रेस गोरखपुर, पृ. स. 511.
4. कोठारी, सी.आर. (2008)अनुसंधान विधिशास्त्र विधियाँ और तकनीकी" न्यूरोज इन्टरनेशनल लिमिटेड पब्लिकेशन कारपोरेशन, आगरा पृष्ठ संख्या-2
5. "स्वाध्याय एक साधना" कल्याण वर्ष 82 सं. 2 गीता प्रेस गोरखपुर, पृ. स. 511.

6. "अनुसंधान विधिशास्त्र विधियाँ और तकनीकी" न्यूरोज इन्टरनेशनल लिमिटेड पब्लिकेशन कारपोरेशन, आगरा पृष्ठ संख्या-2
7. खान ए.आर. (2005)"जीवन कौशल शिक्षा" माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर पृष्ठ संख्या-14
8. गुप्त, नत्थूलाल (2000)मूल्य परक शिक्षा और समाज' नमन प्रकाशन, नई दिल्ली पेज-122
9. गौड़, अनिता (2005): "बच्चों की प्रतिभा कैसे निखारे" राज पाकेट बुक्स नई दिल्ली पृष्ठ संख्या-14
10. चतुर्वेदी, त्रिभुवननाथ (2005) "पारिवारिक सुख के लिए है। किशोर मन की समझ" श्री विजय इन्द्र टाइम्स नई-दिल्ली, अंक-8. पृष्ठ संख्या-25
11. चौबे, सरयू प्रसाद (2005) "शिक्षा मनोविज्ञान" इण्टरनेशनल पब्लिकेशन हाऊस, मेरठ पेज न.184
12. "अनुसंधान एवं अध्ययन' शिक्षा विभाग इलाहावाद विश्वविद्यालय अंक 54 (2003) पेज-20
13. सैनी, अनिता (2004) पी-एच.डी. शोध प्रबन्य राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
14. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका जनवरी-जून 200 पेज-77
15. लोकमान्य शिक्षक सुयुक्तांक 1996 शिक्षा की सं पत्रिका पेत्र 57
16. लोकमान्य शिक्षक सुयुक्तांक 1991 शिक्षा की सं पत्रिका पेत्र-38
17. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका जुलाई-दिसम्बर 2001 पेज न. 55-57
18. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका जुलाई-दिसम्बर 2003 पेज -43